

अंतरराष्ट्रीय व्यापार तनाव: एशिया के लिये चिंता का वषिय

संदर्भ

वर्तमान वैश्विक व्यापार परदृश्य में आई अनश्चितता उन एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के लिये अच्छी नहीं मानी जा रही है, जो नरितर विकास के साधन के रूप में अंतरराष्ट्रीय व्यापार और नविश पर नरिभर हैं।

प्रमुख बदि

- वर्ष 2002 और 2017 के बीच, एशिया में आर्थिक विकास वार्षिक रूप से लगभग 6% था, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से आगे बढ़ा रहा था और जिसने औसत स्तर पर लगभग 4% का वसितार किया था।
- परिणामस्वरूप वर्ष 2002 में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में एशिया का हसिसा 25% से बढ़कर 2017 में 35% हो गया था।
- चीन और भारत इस क्षेत्र की गतिशीलता के महत्त्वपूर्ण योगदानकर्त्ता हैं, जबकि इंडोनेशिया और शेष दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों ने भी 15 वर्ष की अवधि के दौरान आर्थिक क्षेत्र में तेजी से वृद्धि की है।
- इस क्षेत्र द्वारा न केवल छोटे हसिसे को प्रभावित किया गया है, बल्कि वैश्विक व्यापार और नविश के अवसरों को भी संचालित किया गया है।
- वास्तव में, 2002 में वैश्विक नरियात में एशिया का हसिसा 29% से बढ़कर वर्ष 2017 में 38% हो गया है, जबकि वैश्विक आयात का हसिसा इस अवधि के दौरान 22% से 31% तक बढ़ गया है।
- ध्यातव्य है कि वैश्विक वित्तीय संकट से पहले, वर्ष 2002 और 2008 के बीच एशिया में व्यापार मूल्य (मूल्य शर्तों में) 17.5% की औसत से बढ़ गया था।
- अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के विश्व आर्थिक आउटलुक (अप्रैल 2018) के सबसे हालिया आँकड़ों के अनुसार वर्ष 2016 में एशिया के व्यापार में कमी आई है, लेकिन कुछ हद तक 2017 में व्यापार पुनर्जीवित हुआ है।
- हालाँकि, यह विकास दर पूर्व आर्थिक संकट के औसत से काफी कम है।
- अतः अमेरिका और चीन द्वारा अपनाए जाने वाले टटि-फॉर-टैट टैरिफि के खतरों को देखते हुए एशियाई अर्थव्यवस्थाओं को नियम-आधारित बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली के क्रमिक क्षरण के बारे में चिंता होना चाहिए।
- डोनाल्ड ट्रम्प प्रशासन द्वारा 1974 के व्यापार अधिनियम की धारा 301 के तहत मुख्य रूप से एयरोनॉटिकल, ऊर्जा और प्रौद्योगिकी केंद्रित क्षेत्रों पर 60 अरब डॉलर के चीनी आयात पर टैरिफि लगाए जाने की घोषणा की गई है।
- गौरतलब है कि अमेरिका द्वारा यह टैरिफि चीन और उसके अन्य व्यापारिक भागीदारों पर वाशिंग मशीन, सौर पैनल, स्टील और एल्यूमीनियम जैसे आयातों पर लगाए गए हैं।
- बदले में, चीन ने भी अमेरिका से 3 बिलियन अमरीकी डॉलर के आयातित सामानों के प्रतिशोधितमक टैरिफि की धमकी दी है, जो 90% खाद्य उत्पादों और शेष स्टील ट्यूब और एल्यूमीनियम उत्पादों से संबंधित हैं।

व्यापार युद्ध

- यूएस-चीन ने समग्र वैश्विक व्यापार तनाव में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- चीन द्वारा नरितर हस्तक्षेपवादी औद्योगिक नीतियों अपनाकर सरकारी वित्त पोषण से राष्ट्रीय चैपियन बनाने और कोर टेक्नोलॉजीज को सुरक्षित करने तथा स्वदेशी विशेषज्ञता वकिसति करने की अपनी व्यापारिक रणनीति की ओर ध्यान दिया जा रहा है।
- इन सबके के बावजूद यूएस ट्रेजरी मानदंडों के आधार पर या वास्तविक मुद्रा मूल्य के संदर्भ में चीन को मुद्रा मैनेपुलुलेटर नहीं माना जा सकता है।
- यह "मेड इन चाइना 2025" (जर्मनी की "उद्योग 4.0 योजना" से प्रेरित) का हसिसा है, जिसका उद्देश्य 10 घरेलू तकनीकी वनिर्माण उद्योगों में विश्व स्तरीय प्रभुत्व वकिसति करना है।
- इस संदर्भ में, आलोचकों ने तर्क दिया है कि इससे चीन कभी-कभी बौद्धिक संपदा अधिकारों (टीआरआईपी) तथा व्यापार संबंधित पहलुओं और नविश उपायों (टीआरआईएम) से संबंधित विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के समझौते का सम्मान करने में असफल रहा है।
- आलोचकों ने तर्क दिया है कि विश्व व्यापार संगठन अपने अद्वितीय आर्थिक ढाँचे के साथ चीन द्वारा उठाए गए अद्वितीय चुनौतियों से निपटने हेतु तैयार है।

एशिया पर प्रभाव

- वैश्विक व्यापार परदृश्य अतीत में बहुत कम उत्साहजनक और अधिक अनश्चित होगा।
- यह एशियाई अर्थव्यवस्थाओं, विशेष रूप से उन लोगों के लिये अच्छा नहीं है, जो नरितर विकास के साधन के रूप में अंतरराष्ट्रीय व्यापार और नविश पर

